Faculty Name: Dipak Gorai

Title of Book: Significance of Sanskrit Literature in Preservation of Human Life

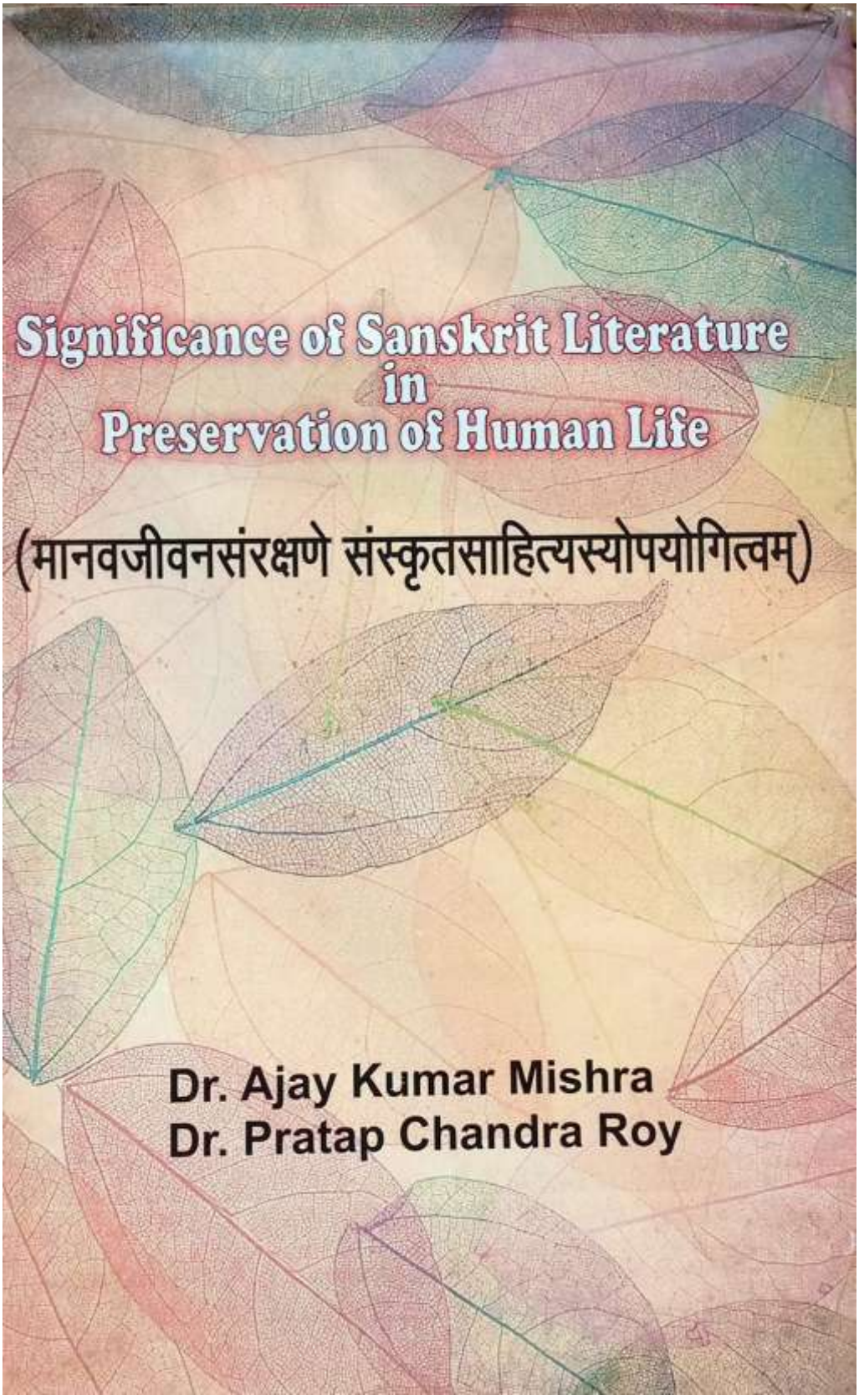

Significance of Sanskrit Literature in Preservation of Human life

(मानवजीवनसंरक्षणे संस्कृतसाहित्यस्योपयोगित्वम्)

Editors:

Dr. Ajay Kumar Mishra

Associate Professor & Head
Department of Sanskrit
Sidho-Kanho-Birsha University
Purulia, West Bengal

&

Dr. Pratap Chandra Roy

Assistant Professor
Department of Sanskrit
Sidho-Kanho-Birsha University
Purulia, West Bengal

Publisher:

Manbhum Sambad Publication Private Limited
Purulia, West Bengal

Significance of Sanskrit Literature in Preservation of Human life
(मानवजीवनसंरक्षणे संस्कृतसाहित्यस्योपयोगित्वम्)

First Edition: 2020

Editors:
Dr. Ajay Kumar Mishra
Dr. Pratap Chandra Roy

Publisher:
Manbhum Sambad Publication Private Limited
P.O. - Dulmi-Nadiha, Purulia, W.B. - 723102

© Copyright reserved by Editors

Printed by:
Vitec Printo
Ranchi Road, Purulia - 723101

Price: 550/-

ISBN: 978-81-949981-1-2

প্রকাশক এবং স্বত্বাধিকারীর লিখিত অনুমতি ছাড়া এই বইয়ের কোনও অংশেরই কোন রূপ পুনরুৎপাদন বা প্রতিলিপি করা যাবে না। কোনও যান্ত্রিক উপায়ের (গ্রাফিক, ইলেকট্রনিক্স বা অন্য কোনও মাধ্যম, যেমন ফটোকপি, টেপ বা পুনরুদ্ধারের সুযোগ সংবলিত তথ্য সঞ্চয় করে রাখার কোনও পদ্ধতি) মাধ্যমে প্রতিলিপি করা যাবে না বা কোনও ডিস্ক, টেপ, পারফোরেটেড মিডিয়া বা কোনও তথ্য সংরক্ষণের যান্ত্রিক পদ্ধতিতে পুনরুৎপাদন করা যাবে না। এই শর্ত লঙ্ঘিত হলে উপযুক্ত আইনি ব্যবস্থা গ্রহণ করা হবে।

विषयसूची

1.	मानवजीवनसंरक्षणे संस्कृतसाहित्यस्य भूमिका	: प्रो. अजितकुमारमण्डलः	19
2.	मानवजीवनरक्षार्थं मनुसम्मतप्रसाधनानामुपयोगित्वम्	: मधुसूदनदासः	26
3.	मानवजीवनसंरक्षणे शकुन्तलानाटकस्य प्रभावः	: डॉ. प्रलयव्यानार्जी	28
4.	संहितासु मानवजीवनसंरक्षणम् : विविधसोपानम्	: डॉ. सुदेवः	32
5.	मानवजीवनसंरक्षायां वैदिकप्रकृतिभावना : एका समीक्षा	: अनिर्वाणः चक्रवर्ती एवं डॉ. सोमनाथदासः	37
6.	मानवजीवनसंरक्षणे अर्थशास्त्रस्योपयोगित्वम्	: बाप्पा-दत्तः	40
7.	मानवजीवनसंरक्षणे वैदिकसाहित्यस्योपयोगित्वम् : एको विमर्शः	: डॉ. दिलीपपण्डाः	44
8.	मानवजीवनसंरक्षणेऽथर्ववेदीयपरिवेशभावनाया उपयोगः	: श्रीदिव्येन्दु-रायः	48
9.	त्यागो मानवशान्तेर्मुलम्	: चन्दनमण्डलः	52
10.	मानवमते मानवजीवनसंरक्षणे भक्ष्याभक्ष्यविचारप्रसङ्गः	: डॉ. कल्याण-पण्डाः	55
11.	श्रीमद्भगवद्गीतायां लौकिकक्षेत्रे उपयोगितविचारः	: डॉ मलयपोडे	60
12.	महाभारते कर्णस्य व्यक्तित्वं वर्तमानसमये तदुपादेयता च	: पार्थकर्मकारः	62
13.	स्मृतिशास्त्रे परिवेशभावना	: दीपकगराइः	67
14.	मानवजीवनसंरक्षिणी मनुसंहिता	: डॉ विप्लवचक्रवर्ती	70
15.	मानवजीवनसंरक्षणाय अष्टाङ्गयोगेषु समाधेरुपयोगिता	: सुप्रियघोषः	73
16.	नैषधचरिते आदर्शमानवजीवनसंरक्षणविमर्शः	: टुम्पाजाना	76
17.	मानवहितसाधने शुनःशेपोपाख्यानम्	: मौमिताखाण्डा	80
18.	मानवजीवनसंरक्षणे तैत्तिरीयोपनिषदः गुरुत्वम्	: सोमनाथसाहा	83
19.	मानवजीवनाय गीतायां भोज्याभोज्यविषये श्रीभगवद्वचनानां बहुटीकानुरोधेण समीक्षणम्	: रूपमयपण्डितः	86
20.	भवभूतिप्रणीते उत्तररामचरिते प्रतिफलितं सामाजिकशिक्षणम्	: खकोनदासः	89
21.	मानवकल्याणे अभिज्ञानशकुन्तलम्	: प्रदीपजानाः	92
22.	वर्तमानसमाजे तथा मानवजीवनसंरक्षणे नीतिशतकस्य उपयोगिता	: श्रावन्तीहालदारः	95
23.	मानवजीवनसंरक्षणे अन्तर्योगतत्त्वस्योपयोगित्वम् : अनिर्वाणदिशा	: चन्दनपइः	98
24.	महाकविकालिदासस्य अभिज्ञानशकुन्तले गृहस्थजीवनम्	: टोटनघोषः	100

48. Antiquity of *Śaiva-Śākta* Philosophical School : Bhaskar Ray 217
49. The Role of *Svapna* and *Suṣupti* in human life according to *Upaniṣads* : Sudeshna Roy 227
50. Vedic Ideology and It's Relevance to Human Life : Manjusha Chakraborty 233
51. Significance of the Secular Hymns in Ancient human Society in the Perspective of *Ṛg-vedic* Literature : Nivedita Chaudhuri 239
52. The Definition of 'Dharmma' in Ancient Sanskrit Literature and its Relevance in Contemporary Life : Dr. Indira Pramanik 248
53. The significance of *Abhijñānaśakuntalam* of Kalidasa in preservation of human life :Dr.Chirashree Mukherjee 257
54. Impact of *Kāvya* and *Nāṭya* Rasa in Human Life : Dr. Jayanta Mandal 264
55. Moral Development by Sanskrit Literature for the Preservation of Human Life : Biswanath Mandal 268
56. মানবজীবন সংরক্ষণে শ্রীমদ্ভগবদ্গীতার উপযোগিতা ঃ একটি প্রাথমিক আলোচনা : সঞ্চিতা গোস্বামী 276
57. ঋগ্বেদের মানবজীবন সংরক্ষণে উপযোগিতা : সুষমা সরেন 282
58. শুশ্রুষার একটি ঐতিহ্য-চরক সংহিতা : সঞ্চিতা সাঁতরা 286
59. মানবজীবন সংরক্ষণ : শতপথ ব্রাহ্মণের প্রেক্ষিতে : সুচন্দ্রা মুখার্জী 291
60. মানবজীবনসংরক্ষণে ঔচিত্য-অনৌচিত্য বিচার : বর্ণালী ব্যানার্জী 296
61. মানব জীবন প্রতিপালনে তর্কশাস্ত্র : জয়দীপ মাহাতো 301
62. ঐহিক ও পারত্রিক কল্যাণে চাতুর্মাস্য যজ্ঞ : নব কুমার দাশ 304
63. নারীর বৈবাহিক জীবন : ঋগ্বেদের বিবাহ সূক্তের দৃষ্টিতে : অভিজিৎ মই 309
64. মানব জীবনে বেদান্ত দর্শনের উপযোগিতা : মামণি মণ্ডল 315
65. মানবজীবনসংরক্ষণে অথর্ববেদীয় অভিচারাদি মন্ত্রের উপযোগিতা : মেখলা দাশগুপ্ত 318
66. বর্তমান সময়ের পরিপ্রেক্ষিতে যোগশাস্ত্রে বর্ণিত অষ্টাঙ্গ যোগের গুরুত্ব : সঞ্জীব মণ্ডল 324
67. মানবজীবন সংরক্ষণে উপনিষদের ভূমিকা : অক্ষয় দে 329
68. মানবজীবন সংরক্ষণে কালিদাসের দৃশ্যকাব্যে আয়ুর্বেদচর্চার প্রাসঙ্গিকতা : পাপন চন্দ 332

69. মানবজীবন সংরক্ষণে জলতত্ত্ব : ঋগ্বেদের আলোকে	: পপি বসাক	337
70. মানবজীবন সংরক্ষণে শঙ্করাচার্যের ভূমিকা	: শ্যাম সুন্দর সাধুখাঁ	342
71. আধুনিক জীবনে বেদমন্ত্রের প্রাসঙ্গিকতা	: ড. অরিজিতা দাস	345
72. মানবজীবনে শ্রীমদ্ভবদ্গীতার উপযোগিতা	: তন্ময় অধিকারী	350
73. অথর্ববেদে মানবজীবন সংরক্ষণের উপায় : একটি সমীক্ষাত্মক অধ্যয়ন	: দীনবন্ধু মণ্ডল	356
74. ষড় ঋতুতে শারীরিক বল বৃদ্ধির উপায় : চরকসংহিতার দৃষ্টিতে একটি অধ্যয়ন	: রাজীব মাহাত	360
75. মানবজীবন সংরক্ষণে গীতার প্রাসঙ্গিকতা	: সোমনাথ গাঙ্গুলী	363
76. মানবজীবন সংরক্ষণে চরক সংহিতার উপযোগিতা	: সঙ্গীতা দে	365
77. মানবজীবন সংরক্ষণে ঈশোপনিষদের অবদান	: উত্তম রজক	371
78. মানবজীবন সংরক্ষণে গর্ভাধান, পুংসবন ও সীমন্তোন্নয়ন সংস্কারের গুরুত্ব	: ড প্রতাপ চন্দ্র রায়	376

स्मृतिशास्त्रे परिवेशभावना

दीपकगराइः*

"जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च" इति भगवद्वचनादेव ज्ञायते यत् मनुजनूनां मरणं हि निश्चितम्। एवं जननमरणमध्ये हि जीवनलीला मनुष्याणाम्। अत एव एषा मनुष्याणां जीवनलीला यथा संरक्षिता भवेत् तथा आयुष्कालपरिमितं जीवनं मधुमयं भवेत् तथाविधः परिवेशः संरचनीयः। यतो हि परिवेशमध्ये एव मनुष्याणां जीवनं व्यतीतं भवति। अतः परिवेशसंरक्षणे सति मनुष्याणां जीवनमपि संरक्षितं भवति। मम एतद्गवेषणापत्रे परिवेशसंरक्षणविषये स्मृतिशास्त्रे कीदृशी भावना प्रकटीकृता तदेव संक्षेपतः प्रस्तूयते।

वृक्षसंरक्षणे स्मृतिशास्त्रम् -

इदानीन्तनसमाजे मनुष्याणां स्वेच्छाचारेण प्रकृतिर्हि विपर्यस्ता। प्रकृत्या सह प्राणिजगतः स्वाभाविकविकाशगतिरपि अवरुद्धा। वैदिकसमये तथा तत्परवर्तिनि समयेऽपि मनुष्यैः सह वृक्षादेः पशुविहगानाञ्चापि एकं मधुरं सहावस्थानं परिलक्ष्यते इति स्मृतिशास्त्रकाराणां ग्रन्थेभ्य उपलभ्यते। अपि तु, स्मृतिशास्त्रकारैः एतत्सहावस्थावसंरक्षणविषये तथा तेषां परिवेशसंरक्षणविषये बहुधा उपदिष्टम्। आचार्यमनुमते कूपखननकारी, उद्याननिर्माता, जलसत्रनिर्माता, वृक्षरोपणकारी तथा सेतुनिर्माता मनुष्यः निश्चितमेव स्वर्लोकं गच्छति। आचार्यमनोः एवंविधया उक्त्या एव प्रतीयते यत् स हि परिवेशं सर्वत एव संरक्षितुं सचेष्टः आसीत्। मनुसंहितायां तथा अन्यस्मृतिशास्त्रादिष्वपि मनुष्यं प्रति तथा तेषां परिवेशं प्रति प्रभूतकर्तव्यानां निर्देशः कृतः। पृथिव्यां मनुष्यः, पशुः, पिशाचः, राक्षसः, कुमीरः, मत्स्यः प्रभृतिः तथा नानाविधवृक्षादेः एकां सूचीं प्रदाय आचार्यमनुः वृक्षपालनविषयं प्रति विशेषतया उपदिष्यवान्। बीजादुत्पन्नस्तथा रोपितशाखातः उत्पन्नवृक्षः प्रभृतिविषये सुनिपुणतया वर्णना प्रदत्ता आचार्यमनुना। तथा च, बहुफलपुष्पशोभितवृक्षस्य, आगते पञ्चफले मृतो भवति तथाविधवृक्षस्य, अपुष्पितेऽपि फलवान् भवति एवंविधवृक्षस्य, गुच्छवृक्षस्य तथा गुल्मवृक्षस्य परिचयं प्रदाय आचार्यमनुः उक्तवान् - 'अन्तःसंज्ञा भवन्त्येते सुखदुःखसमन्विताः' इति।[1]

अस्यायमाशयः – मनुष्या इव वृक्षाणामपि अनुभवशक्तिरस्ति तथा सूक्ष्मेक्षणेन तद्बोद्धुमपि शक्यते। एतदेव परवर्तिनि काले वैज्ञानिकेन आचार्यजगदीशचन्द्रेण यन्त्रद्वारा प्रमाणीकृतम्। वृक्षाणां क्षतिर्भवति एवं किमपि विषये आचार्यमनोरपि अनुमोदनं नासीत्। वृक्षान् व्यतीरीच्य अन्यप्राकृतिकसम्पदः संरक्षणविषये तथा समाजस्य कल्याणं भवति एवंविधस्थानसंरक्षणविषयेऽपि विविधविधानं स्मृतिशास्त्रेषु प्रदत्तम्। पशुपक्षिवृक्षादीनां तथा कल्याणसाधकस्थानविशेषस्य क्षतिसाधनं स्मृतिशास्त्रे दण्डपारुष्यरूपेण तथा साहसविवादरूपेण विचार्य दण्डविधानं कृतम्। न केवलं पशुहननं तथा पशुताडनं अपि तु क्षुधार्तेन तृष्णार्तेन परिश्रान्तेन वा पशुना वहनकार्यकरणमपि दण्डनीयापराधरूपेण परिगणितं स्मृतिशास्त्रेषु। आचार्यमनुमते येन पुशसमूहः आहतो भवति एवंविधं कार्यं यदि कोऽपि करोति चेत् कष्टस्य लाघवगौरवदिशा विचार्य राजा दण्डविधानं कुर्यादिति। तदुक्तं मनुना मनुसंहितायामष्टमाध्याये-

'पशुषु स्वामिनाञ्चैव पालानाञ्च व्यतिक्रमे।
विवादं संप्रवक्ष्यामि यथावद्धर्मतत्त्वतः।।' इति।[2]

प्रायेण सर्वस्मार्तकारैः स्मृतिशास्त्रेषु वृक्षादीनां क्षतिसाधनकारिणं दण्डविधानं कुर्यादिति निगदितम्। परमत्र कैश्चित् स्मार्तकारैः वृक्षादीनां गुरुत्वं विचार्य क्षतिं परिमाप्य स्वल्पदण्डस्य तथा अधिकदण्डस्य विधानं प्रदत्तम्। आचार्ययाज्ञवल्क्यमते चैत्ये विहारादौ वा, श्मशाने, सीमास्थले, पवित्रस्थाने देवमन्दिरे वा इत्यादिस्थलेषु स्थितवृक्षस्य सम्पूर्णच्छेदने शाखाविशेषच्छेदने वा सा धारणवृक्षच्छेदनरूपक्षतिसाधनदण्डापेक्षया द्विगुणदण्डविधानं कुर्यात्। तेन तादृशे अपराधे कृते विंशतितः चत्वारिंशत्पर्यन्तमपि दण्डो भवितुमर्हति। अत एव सम्यगुक्तं याज्ञवल्क्यस्मृतौ-

* Assistant Professor, Department of Sanskrit, Bejoy Narayan Mahavidyalaya